श्रव्य-दृश्य साधन
(Audio-Visual Aids)

1. चलचित्र (Motion pictures) : चलचित्र या मूवी की , शिक्षण-सहायक साधन के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका है । एक चित्र भी व्यक्ति के मनमस्तिष्क पर प्रभाव डालता है; मूवी तो अनेक चित्रों की सजीव शृंखला होती है और वास्तविक क्रियाओं और वाणी से व्यवहार और क्रिया का प्रदर्शन करती है । इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि इसकी कितनी अधिक सघन प्रभावशीलता (accumulative effectiveness) हो सकती है । प्रति सेकेंड बारह के हिसाब से दिखाने से, चित्रों में गति और जीवंतता आ जाती है । वे केवल स्थिर चित्र नहीं रह जाते हैं । इनका प्रभाव बड़ा ही वास्तविकतापूर्ण (real impact) होता है । इनके प्रयोग से दर्शकों में रुचि बढ़ती है, उत्सुकता बढ़ती है और नए-नए भाव, उनके मन में उभरते हैं । वैसे भी हम सभी जानते हैं कि लोग चलचित्र, चाहे वह किसी चीज से भी सम्बन्धित क्यों न हो, बड़ी रुचि से देखते हैं । किसी विशेष प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को दिखाने का यह श्रेष्ठ माध्यम है । इतना ही नहीं, चलचित्र के रूप में तैयार करके, किसी भी प्रकार की सीख, ग्रामीण जनता तक आसानी से पहुँचायी जा सकती है । चलचित्र को दिखाने के पहले, विषय से, दर्शक समूह को परिचित करा देना चाहिए । दर्शकों को किन्हीं खास बातों यानी "सीन" को विशेष ध्यान से देखने के लिए कह देना चाहिए । वैसे तो फिल्म स्वयं भी बहुत कुछ बताने और सिखाने की क्षमता रखती है परन्तु इनका प्रयोग एक शिक्षण सहायक-सामग्री के रूप में ही किया जाना, ग्रामीण दर्शकों के हित में रहता है । चलचित्र या मूवी , शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकार के लोगों तक, अपना संदेश पहुँचा सकती है । यह रुचि बढ़ाने और व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने का अच्छा माध्यम है । इसकी पहुँच व्यापक होती है, इसका असर गहरा और गहन होता है ।

2. टेलीविजन (Television) : टी० वी० की लोकप्रियता दिन-प्रति-दिन बढ़ रही है । शिक्षण-सहायक साधन के रूप में, इसकी लोगों के बीच लोकप्रियता का, पूरा लाभ उठाया जा सकता है । इस माध्यम से एक ही स्थान पर से, बड़े दूर-दूर के क्षेत्र में, शिक्षण-कार्य को एक बार में पहुँचाया जा सकता है । यह ट्रांसमिशन के द्वारा टेलीकास्ट करने की युक्ति है, "It is a device which converts light rays into electrical waves and reconverts these into visible light rays." इसलिए जहाँ तक प्रोग्राम पहुँचाने का लक्ष्य रहे, वहाँ

Scanned with CamScanner

तक ट्रांसमिशन की व्यवस्था और टी० वी० सेट को उपलब्ध कराया जाना जरूरी है । टी० वी० प्रोग्रामों के प्रति ग्रामीणों को चलचित्र के समान आकर्षण रहता है, अतः इनके माध्यम से बहुत तरह की सीख उन तक पहुँचायी जाती है । स्थानीय परिस्थितियों में अन्तर होने के कारण और भाषायी कठिनाई को दूर करने के लिए जरूरी है कि क्षेत्रीय प्रोग्राम निर्माण-केन्द्र और टेलीकास्ट सुविधा दी जाए । टी० वी० प्रोग्रामों को सूझबूझ के साथ आयोजित किया जाना परम आवश्यक है जिससे दर्शकों पर सही और गहन प्रभाव पड़ सके । मनोरंजन के साथ-साथ, सीख देने का यह महत्त्वपूर्ण साधन है । शिक्षण-सामग्री को विडियो कैसेट के रूप में तैयार करके दिखाया जा सकता है । इन कैसेटों का प्रयोग केन्द्र से भी हो सकता है और इन्हें वी० सी० आर० से निर्धारित स्थल पर दिखाया जा सकता है । इनका पुनः प्रदर्शन भी संभव होता है ।

3. ड्रामा, कठपुतली तथा पारम्परिक मीडिया (Drama and Puppet shows etc.) : यह सब भी ऐसे साधन हैं जिन्हें शिक्षण-कार्य में सहायता के लिए प्रयोग किया जा सकता है । ग्रामीण लोगों का इनसे मनोरंजन भी होता है और उन्हें कुछ सीख भी दी जा सकती है । ये सब "traditional media" के अन्तर्गत आते हैं । इनमें ड्रामा और कठपुतली के अतिरिक्त अन्य पारम्परिक परफोर्मिंग आर्ट्स भी आते हैं । ये जनता में लोकप्रिय होते हैं । ये लोगों को प्रिय होते हैं और वे इन्हें बड़ी रुचि से देखते हैं । अतः इनका प्रयोग जनता को कुछ सिखाने-बताने के लिए किया जा सकता है । जैसे बड़े परिवार से हानि, छोटे परिवार के लाभ, सामाजिक कुरीतियों के बारे में जानकारी, महिलाओं के अधिकारों के बारे में तथा लाभकारी योजनाओं की जानकारी आदि । कठपुतली अल्पव्ययी और सहज उपलब्ध साधन है । यह दर्शकों को आकर्षित करती है । इससे शिक्षण और मनोरंजन दोनों ही हो जाता है । प्रसार के लिए कठपुतली प्रोग्राम का आयोजन, समय की जरूरत और माँग के अनुरूप किया जाना जरूरी है । सामयिक समस्याओं में इनको पिरोया जा सकता है । अतः सहज होते हुए भी इनके प्रयोग में सूझ-बूझ के साथ, समय और श्रम भी लगता है । दर्शक इसमें पात्र और परिस्थिति से अपनत्व महसूस करते हैं और उनके प्रदर्शन, दर्शकों के हृदय को छूते हैं । छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष, वृद्ध-प्रौढ़ सभी इन्हें पसंद करते हैं । यह समूह संचार का, ग्रामीण परिस्थितियों के लिए श्रेष्ठ साधन है । यही बात सभी पारम्परिक लोक-कलाओं (लोक नृत्य, लोक गीत, छाया अभिनय, नाटक, नाटिका आदि) के बारे में कही जा सकता हैं । उनका भी दृश्य-श्रव्य साधन के रूप में सफल प्रयोग किया जा सकता है ।

4. वीडियो टेप (Video tape) : वीडियो टेप में ध्वनि एवं चित्र दोनों ही रिकार्ड हो जाता है । पुनः इसे वीडियो रिकॉर्ड प्लेयर की सहायता से टेलीविजन स्क्रीन पर दिखाया जाता है । यह महंगा यंत्र है इसलिए इसका अधिक प्रयोग नहीं किया जा सक रहा है । परन्तु इसमें कोई शक नहीं कि यह शिक्षण-सहायक-साधन के रूप में एक महत्त्वपूर्ण सामग्री है । यह चलचित्र के समान ही विविध कामों के लिए प्रयोग किया जा सकता है तथा ग्रामीणों को इसे देखने में बड़ी रुचि रहती है । कृषकों और गृहिणी के कार्यक्रम टेप करके, ग्रामीणों को शिक्षण देते समय दिखा कर, उन्हें प्रभावित किया जा सकता है । किन्हीं विषयों पर चर्चा-परिचर्चा तथा किन्हीं विषयों पर लोगों के विचार, प्रयोग किए हुए कृषक या गृहिणी के निजी अनुभव दिखाकर, लोगों के ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है । उन्हें प्रेरित और उत्साहित किया जा सकता है । इनमें दिए गए संदेशों को दिखा-सुना कर, ग्रामीणों के साथ इन्हीं पर चर्चा करने के लिए सभा बुलाई जा सकती है ।

अध्ययनों में पाया गया है कि प्रसार कार्यकर्ता अपने कार्यों में बहुत कम दृश्य-श्रव्य

Scanned with CamScanner

सामग्रियों का प्रयोग करते हैं । इसलिए उनके कार्य पूर्ण सफलता नहीं हासिल कर पाते हैं । श्रव्य-दृश्य साधनों में यह गुण होता है कि उनके प्रति अधिक आकर्षण होने के कारण उनमें बताई बातें ग्रामीणों के मन में गहरे बैठती हैं और मन मस्तिष्क पर गहन असर डालती हैं । कार्यकर्त्ता आलस्यवश अथवा अक्षमता के कारण या उपलब्ध नहीं होने से या फिर सुविधा नहीं मिलने के कारण श्रव्य-दृश्य साधनों को प्रयोग करने में कमी कर देते हैं । फलतः उनके शिक्षण का प्रभाव भी स्थायी नहीं होता है । इसका यह भी कारण हो सकता है कि अधिकांश प्रसार कार्यकर्त्ताओं को श्रव्य-दृश्य सामग्रियों को तैयार करने का और प्रयोग करने का पूरा ज्ञान नहीं रहता है अथवा उन्हें इस सम्बन्ध में पूरी ट्रेनिंग नहीं मिली रहती है । ग्रामीणों के शिक्षण में इनके महत्त्वपूर्ण योगदान को देखते हुए, यह कहा जा सकता है कि कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण में इन सामग्रियों को तैयार करने और प्रयोग करने पर विशेष ध्यान दिया जाना जरूरी है । साथ ही, यह भी याद रखने की बात है कि किसी भी साधन की प्रभावशीलता, उसकी विषय-वस्तु, तैयारी और प्रस्तुतीकरण पर निर्भर करती है । बेहतर होगा कि ऐसे कार्यक्रमों को तैयार करने का काम विशेष एजेन्सी को सौंपना चाहिए, जिन्हें ग्रामीण विकास के कामों में प्रयोग किया जा सके । फील्ड स्टाफ को भी, इनके अधिकाधिक और सार्थक प्रयोग के लिए, गहन प्रशिक्षण देना चाहिए । इसके अलावा पारम्परिक मीडिया (स्थानीय रूप से उपलब्ध) के विकास की ओर ध्यान दिया जाना जरूरी है । क्योंकि ग्रामीण इनसे भावनात्मक तल पर मजबूती से जुड़ा रहता है । डॉ० सिंह ने सुझाव दिया है, "Inspite of the fact that aids facilitate the extension work, they must be used cautiously local customs and traditions, habits and psychology of the people, always be kept in mind while selecting and using a teaching aid."

Scanned with CamScanner